अध्याय 1

प्रस्तावना –

मानव अपने दैनिक जीवन में विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति करना चाहता है| जिसके लिए वह अनेकानेक प्रयत्न करता है किन्तु सभी प्रकार की इच्छाओं और उद्देश्यों की पूर्ति के लिए केवल मानवीय प्रयत्न ही पर्याप्त नहीं होते बल्कि कुछ ऐसी शक्तियों की भी सहायता लेनी पड़ती है जो उसकी शक्ति से श्रेष्ठ एवं परे है, साथ ही समाज एवं प्रकृति से परे एवं परलौकिक है। मानव ने विभिन्न क्रियाओं के द्वारा इन अतिमानवीय शक्तियों को नियंत्रण करने व उन पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न किया और वह जब अपनी असमर्थता स्वीकार कर उन पर नियंत्रण करने के बजाय उनसे नियंत्रित होने लगता है या समर्पण कर नतमस्तक हो जाता है, तो धर्म का उदय होता है।

धर्म, मनुष्य के जीवन का एक अनिवार्य तत्व है। धर्म की विशेषताओं, उसके आदर्शों और जीवन को संगठित करने से सबन्धित उसके कार्यों को देखते हुये यह स्वीकार कर लेना पड़ता है कि धर्म एक ऐसा अमूर्त तत्व है जो मनुष्य कि बुनियादी आवश्यकताओं से भी बढ़कर महत्वपूर्ण है। डेविस के शब्दो में, "मानव समाज में धर्म इतना सार्वभौमिक, स्थायी एवं व्यापक है कि धर्म को स्पष्ट रूप से समझे बिना हम समाज को नहीं समझ सकते।" मनुष्य की भिन्न-भिन्न संस्थाओं में धर्म सर्वोत्तम तथा सर्वकालीन है। इतिहास के पन्नों को उलटकर देखने से पता लगता है कि हर समय तथा हर स्थान पर मनुष्य ने किसी-न-किसी ढंग तथा रूप से धर्म में विश्वास रखता है। इस प्रकार धर्म का इतिहास वास्तव में मानवीय समाज का इतिहास है। धार्मिक जीवन को जानने से पहले ये जानना आवश्यक है कि धर्म क्या है। धर्म प्रत्येक समाज में पाया जाता है। धर्म अलौकिक शक्ति में विश्वास एवं इनकी उपासना पर आधारित होता है। धर्म का संबंध हमारी मानसिक प्रवृति से होता है जिसका प्रादुर्भाव हमारे विचारों और संस्कारों द्वारा होता है। 'धर्म' शब्द 'धृ' धातु से बना है जिसका अर्थ धर्म करना है अर्थात जिसके

द्वारा ब्रह्मांड धारण किया जाता है। बोकेट[1] (Bouquet)1954, के अनुसार धर्म (Religion) एक लैटिन (Latin) शब्द *Rel + igio* से निकला है, जिसका अर्थ है- इकट्ठा करना, गिनना, व निरीक्षण करना या बांधना। इस प्रकार इस शब्द का अर्थ हुआ- किसी पारलौकिक शक्ति में विश्वास रखना और उसका निरीक्षण करना। दूसरा अर्थ यह भी होता है कि उन आवश्यक कार्यों की पूर्ति करना, जो मनुष्य तथा किसी अलौकिक शक्ति को परस्पर बांधते हैं। मनुष्यों में धर्म आदेश की भावना प्रदान करती है।

धर्म, मानवविज्ञानियों के लिए एक आदर्श विषय का प्रतिनिधित्व करता है। मनुष्य के मन में यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठा कि आखिर इस धर्म जैसी जटिल संस्था का जन्म कैसे हुआ ? वे कौन सी परिस्थितियाँ, दशाए एवं कारक थे ? जिन्होंने धर्म जैसी संस्था को जन्म देने में सहायता प्रदान की। अनेक मानवशास्त्रियों ने धर्म की उत्पत्ति को ज्ञात करने के लिए आदिम समाजों का अध्ययन किया। आदिम समाज छोटे एवं सरल प्रकृति के होते है। अतः वे संस्कृति के प्रारम्भिक रूप एवं उद्गम को समझने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

[1]Bouqet, A.C.(1884). Comparative Religion. Harmondsworth: Penguin book.

धर्म की विशेषताएँ-

धर्म के प्रमुख तत्व-

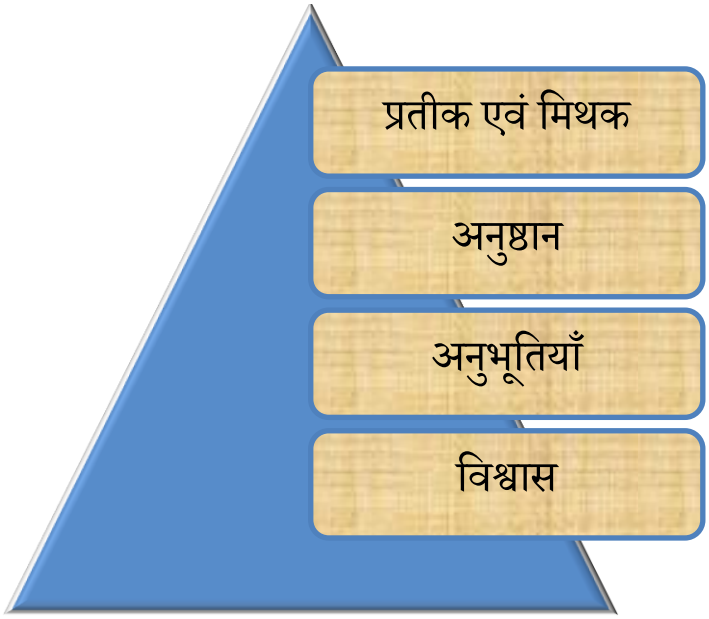

अनेक मानवशास्त्रियों ने सोचा की आदिम समाजों से ही जटिल समाजों की उत्पत्ति हुई है। अतः आदिम समाजों में ही धर्म की उत्पत्ति का पता लगाने का प्रयत्न किया जाए। आदिम जातियों में धर्म की खोज के दौरान कई प्रकार विश्वास एवं कर्मकांडों का ज्ञान हुआ जिन्होने विभिन्न सिद्धांतों को जन्म दिया। धर्म के मानव विज्ञान के अध्ययन में एडवर्ड बी टायलर , मैक्स मुलर , डब्ल्यू राबर्ट्सन स्मिथ , सर जेम्स फ्रेज़र जी के मौलिक कार्य उन्नीसवी सदी के अंत में शुरुआत की थी।

धर्म को परिभाषित करें तो अलग-अलग मानवशास्त्रियों ने अलग-अलग प्रकार से धर्म को परिभाषित किया है। टायलर[2] (Tylor) का कथन है कि "धर्म आध्यात्मिक शक्ति पर विश्वास है।" टायलर ने अपनी परिभाषा में धर्म को प्रत्यक्ष रूप से आध्यात्मिक विश्वास के साथ संबंधित किया है। जब मनुष्य अपनी शक्ति और विवेक से किसी घटना के कारण को समझने में असमर्थ हो जाता है तो वह भय और श्रद्धा के फलस्वरूप किसी-न-किसी अलौकिक शक्ति पर विश्वास करने लगता है। यही धर्म है। मैलीनोवस्की[3] (Malinowski) का विचार है कि " धर्म क्रिया की एक विधि है और साथ ही विश्वासों की एक व्यवस्था भी। धर्म एक समाजशास्त्रीय तथ्य होने के साथ ही एक व्यक्तिगत अनुभव भी है ।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि धर्म अलौकिक शक्ति से संबंधित विश्वासों की वह व्यवस्था है, जो मानव अनुभव से प्रभावित होते हुये भी मानवीय शक्ति से परे है तथा किसी रहस्यमय शक्ति का बोध कराती है। अलौकिक शक्ति में विश्वास तथा अनुष्ठान धर्म के दो महत्वपूर्ण संगठन हैं।

[2] Tylor, E.B.(1871). primitive culture. Londen: John Murry Albemarle street.

[3] Malinowski, B. (1948). Magic Science and Religion. California university: Greenwood Press.

धार्मिक जीवन –

मनुष्य अपने दैनिक जीवन में धर्म का उपयोग एक उपकरण के रूप में करता है। वह जन्म से लेकर मृत्यु तक विभिन्न प्रकार के धार्मिक विश्वास और क्रियाएँ करता है जिससे उसे शारीरिक और मानसिक रूप से संतुष्टि मिलती है। वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए रोजमर्रा के जीवन में अपने देवी-देवताओं की पुजा-पाठ, संस्कार, पवित्र स्थान, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे इत्यादि पर विश्वास कर उनके लिए किया करते हैं।

मनुष्य जैसे ही जन्म लेता है वैसे ही वह किसी धार्मिक सम्प्रदाय से जुड़ जाता है और अपने सम्प्रदाय से जुड़ी हुई रीति-रीवाज, परंपरा, देवी-देवता, त्यौहार-पर्व, को मानने लगते हैं। मनुष्य के मृत्यु होने के बाद भी उसका अंतिम संस्कार उसके धार्मिक परम्पराओं के आधार पर किया जाता है। प्रायः हर समाज में धार्मिक जीवन से जुड़े हुये कुछ क्रियाए होती है। जिसे चित्र के माध्यम से समझने का प्रयास की गई है।

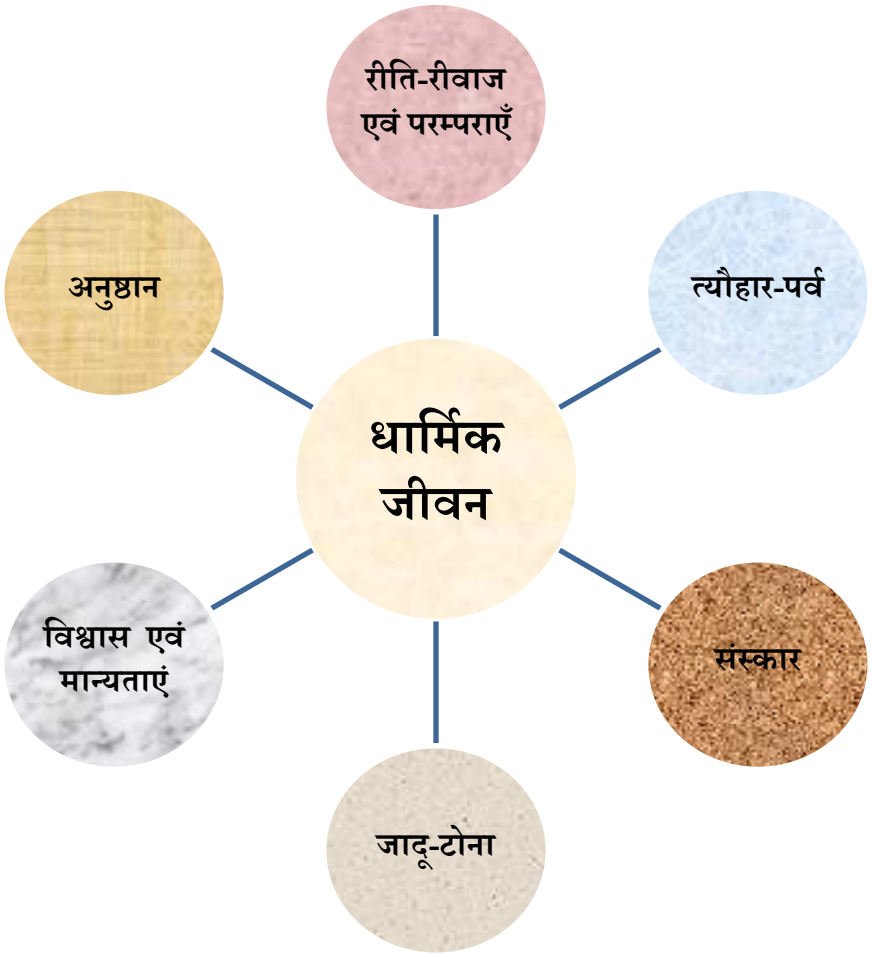

ये धर्म के सभी पक्ष संसार के पूरे समाज में देखने को मिलता है।

जनजातियों में धार्मिक जीवन –

जनजातीय जीवन में धर्म का बहुत ही महत्व है। अतः प्रत्येक जनजातीय परिवार एक विशेष धर्म में विश्वास करता है। धर्म का जनजातीय सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। जनजातियों में सामाजिक जीवन काफी सीमा तक धार्मिक विश्वासों एवं व्यवहरों तथा सांस्कृतिक परम्पराओं द्वारा निर्धारित एवं नियमित होता है। यही विश्वास एवं परंपराएं जनजातियों में सामाजिक नियंत्रण के सशक्त

माध्यम भी है। धर्म; अनेक प्रकर के व्यवहार संबंधी नियमों को लागू करने के लिए संस्कारों, समारोह, अनुष्ठानों, पुजारियों की सत्ता तथा अन्य विशेष प्रतिकों जैसे संस्थागत साधनों का प्रयोग करता है। धर्म आदिवासियों की भावनाओं से संबंधित होता है। जो व्यक्ति जितने अधिक भावुक होता है वह उतना ही अधिक धार्मिक होता है। जनजातीय जीवन में धर्म का संबंध उनके जन्म से लेकर मृत्यु तक सम्मलित होता है। बच्चे के जन्म से लेकर मृत्यु तक विभिन्न प्रकार के अनुष्ठान, रीति-रीवाज, धार्मिक क्रियाएँ किया जाता है। जनजातीय समाज में आर्थिक, सामाजिक, व राजनैतिक रूप से धर्म का प्रभाव विशेष रूप से इनमे देखने को मिलता है। शिकार करने, कृषि कार्य, समाज में अनुष्ठानिक भोज इत्यादि में भी धार्मिक विश्वास और क्रियाएँ करते हैं। जनजातीय समाज में विभिन्न प्रकार के त्यौहार, देवी-देवता होती है। अनुष्ठान के माध्यम से विभिन्न प्रकार के बीमारियों के उपचार भी किया करते हैं।

1.1 विषय का चुनाव –

किसी प्रकार के समस्याओं का अध्ययन करने से पहले उस विषय का चुनाव करना अतिआवश्यक होता है। जब मैं एम. एस. सी. द्वितीय सेमेस्टर में था तब मैंने कमार आदिम जनजाति पर उनके धार्मिक विश्वास और क्रियाकलापों पर अध्ययन किया। अध्ययन के दौरान उनके जीवन से संबंधित उनमें पाये जाने वालें विशेष प्रकार के धार्मिक विश्वास और क्रियाकलापों, संस्कार, देवी-देवताओं का अवलोकन कर निष्कर्ष निकाला कि इनकी दैनिक जीवन में धर्म का एक विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। कमार जनजाति के लोग हर छोटी-सी-छोटी क्रिया के लिए भी धर्म का सहारा लेतें हैं। पहाड़ी कोरवा एक विशेष पिछड़ी आदिम जनजाति है। उनके जीवन में धर्म का क्या महत्व है तथा उनमें भी उनके जीवन से संबंधित कोई विशेष प्रकार की धार्मिक विश्वास, क्रियाकलाप, रीति-रीवाज़, देवी-देवता, और मान्यता

पाये जाते हैं। जिसे जानने के लिए मेरे मन में जिज्ञासा पैदा हुई इसलिए मैंने "पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति का धार्मिक जीवन" शोध विषय का चुनाव किया है।

1.2 अध्ययन का महत्व-

अनुसंधान चाहे जिस क्षेत्र में भी किया जाए उसका एक निश्चित उद्देश्य एवं महत्व होता हैं। उस उद्देश्य एवं महत्व के आधार पर अनुसंधान का औचित्य का निर्धारण होता हैं। शोधार्थी के साहित्य व लेख के अध्ययन के आधार पर यह ज्ञात हुआ है कि कोरबा जिले के विशेष संदर्भ में अभी तक पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति के धार्मिक जीवन पर कोई विस्तृत अध्ययन नहीं हुआ है। मैं अपने शोध में कोरबा जिले के पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति के धार्मिक जीवन से संबंधित रीति-रीवाज, देवी-देवता, त्यौहार, अनुष्ठान, संस्कार, मान्यताएँ, विवाह, पुजा-पाठ इत्यादि के प्रति उनमें पाये जाने वालें उनके विश्वास तथा विभिन्न क्रियाकलापों का विस्तारपूर्वक अध्ययन करने का प्रयास किया जाएगा।

शोध प्रश्न :- साहित्यपुनरावलोकन के उपरांत यह पाया गया की पहाड़ी कोरवा के धार्मिक जीवन में वर्तमान समय मेन किस प्रकार परिवर्तन हो रहा है। उस पर मानवशास्त्रियों के के द्वारा नहीं के बराबर कार्य किए गए है। इसे के आधार पर मैंने अग्रलिखित शोध-प्रश्न बनाया है जो निम्न है।

शोध प्रश्न – क्या पहाड़ी कोरवा के धार्मिक जीवन में परिवर्तन हुआ है?

1.3 अध्ययन के उद्देश्य –

2. पहाड़ी कोरवा जनजाति में पाये जाने वालें अनुष्ठान, संस्कार, त्यौहार का उनके जीवन में क्या महत्व है विस्तृत वर्णन कर प्रलेखन करना।

3. पहाड़ी कोरवा जनजाति में धार्मिक विश्वास और मान्यताओं का प्रलेखन करना।

4. पहाड़ी कोरवा जनजाति का नृजातिगत वर्णन करना।

1.4 प्राकल्पना-

2. (a^0) पहाड़ी कोरवा जनजाति के धार्मिक जीवन में विश्वास और क्रियाओं को अधिक महत्त्व दिया जाता है।

(a^1) पहाड़ी कोरवा जनजाति के धार्मिक जीवन में विश्वास और क्रियाओं को अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता है।

2. (a^0) पहाड़ी कोरवा जनजाति के युवा वर्ग में धार्मिक जीवन से संबंधित धार्मिक विश्वासों और कियाओं के प्रति रुझान बढ़ा है।

(a^1) पहाड़ी कोरवा जनजाति के युवा वर्ग में धार्मिक विश्वासों और क्रियाओं के प्रति रुझान कम हुआ है।

1.5 शोध की सीमा एवं परिसीमाएं –

हर शोध की एक सीमा होती है उसी के तहत शोध का कार्य सम्पन्न किया जाता है। शोध में समय की बहुलता में कमी के कारण मेरे द्वारा किया गया शोधकार्य पहाड़ी कोरवा के धार्मिक जीवन शोध विषय पर है जिसकी अपनी सीमा एवं परिसीमा है जो निम्न है-

- समय की कमी के कारण पहाड़ी कोरवा द्वारा मनाए जाने वालें प्रमुख त्यौहारों के बारे में अधिक जानकारी नहीं मिल पायी जिसेसे हम उनके जीवन के बारे में विस्तृत रूप से जानने में असमर्थ रहे । लेकिन हरेली के त्यौहार के समय ही मेरा शोध कार्य प्रगति पर था जिसकी जानकारी सही रूप में प्राप्त हुई क्योंकि उस दौरान मैं कोरवा, बैगाओं के साथ जसस उनके सामाजिक व्यवहारों का अवलोकन किया।

- करीब 25-30 युवक ऐसे थे जो कोरवा जिले में चल रहे ड्राइविंग की ट्रेनिग के लिए गए हुये थे। अगर उनकी उपस्थिती होती तो मेरे प्रतिदर्श का आकार और बढ़ जाता।
- अध्ययन क्षेत्र जंगलो से काफी घिरा हुआ है जिसके कारण वहाँ रात 8 बजे के बाद उनका अवलोकन करना असंभव था। इस कारण से पहाड़ी कोरवा के लोग रात्रि कैसे व्यतीत करते हैं इसकी जानकारी लेने में असमर्थ रहें।
- दो-तीन गाँव, सड़क से 10 किलो मीटर अंदर जंगल में उनका निवास स्थान होने के कारण वहाँ सिर्फ दो- तीन बार ही जाना हुआ क्योंकि वहाँ का आवागमन पैदल चलने के बाद ही पहुचना सुनिश्चित हो पाता है अन्यथा दूसरा कोई विकल्प नहीं था।

****